Topic – FAVOURABLE CONDITIONS FOR SOCIAL REFORM MOVEMENTS IN INDIA (भारत में सामाजिक सुधार आन्दोलन की सहायक अवस्थाएँ)

Ans – (1) आधुनिक यातायात तथा संचार के साधन सहायक कारकों में प्रमुख थे। अंग्रेजों ने इस देश में अपने व्यापार तथा वाणिज्य को सुचारु रूप से व्यवस्थित करने के लिए आवागमन के साधनों तार, टेलीफोन, सामुद्रिक जहाज और अन्य साधनों को विकसित किया। इसके फलस्वरूप अंग्रेजों को पर्याप्त आर्थिक व राजनीतिक लाभ तो हुआ, पर साथ ही अपने भारत के विभिन्न भागों की पारस्परिक दूरी दिन-प्रतिदिन घटती गई और सम्पूर्ण भारत में शांति तथा राजनीतिक एकता स्थापित हो गई। इससे समाज-सुधार-आन्दोलन चलाने में सहायता मिली, क्योंकि अशांति और उथल-पुथल के बीच समाज-सुधार की आवश्यकता की ओर लोगों का ध्यान अधिक आकर्षित नहीं किया जा सकता। साथ ही आधुनिक यातायात व संचार के साधनों के विकसित हो जाने से समाज-सुधारकों के लिए दूर-दूर के लोगों के विचारों से परिचित होना या उससे लाभ उठाना तथा अपने विचारों को दूर-दूर तक फैलाकर सुदृढ़ जनमत का निर्माण करना सरल हो गया।

(2) पाश्चात्य संस्कृति व आदर्श इस दिशा में इसरा प्रमुख कारक था। भारत के पाश्चात्य देशों के साथ सम्पर्क बढ़ने के कारण भारतीयों में पाश्चात्य संस्कृति तथा ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हुआ। इसके फलस्वरूप अनेक भारतीयों की आँखें खुल गईं और वे समाज-सुधार-आन्दोलन में भाग लेने लगे। उसी प्रकार, भारत में कुछ अंग्रेज विद्वानों, जैसे डेविड हेयर (David Hare), कैरी (Carey), मैकाले (Macaulay) आदि के विचारों से हमारे देश में एकाधिक लोगों के सामाजिक तथा धार्मिक विचारों पर बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा और उनमें समाज-सुधार की आवश्यकता के

के प्रति एक प्रकार की जागरूकता का प्रचार हुआ।

(3) ईसाई मिशनरियों के प्रभाव को भी भारतीय समाज-सुधार आन्दोलन के विकास में अस्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक मिशनरी यूरोप, कनाडा, अमेरिका आदि से भारत में आए, जिनका मुख्य उद्देश्य इस देश में ईसाई धर्म का प्रचार करना था। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह आवश्यक था कि वे भारतीयों के निकट सम्पर्क में आते और उन्हें अपनी सेवाओं द्वारा अत्यधिक प्रभावित करते। इसके लिए उन लोगों ने इस देश के विभिन्न भागों में विद्यालय, चिकित्सालय तथा अनाथालय आदि खोले। इसके दो प्रभाव हुए। प्रथम तो यह कि मिशनरियों के प्रचार के फलस्वरूप जनता में एक नवीन जागृति की लहर आयी और समाज-सुधार के महत्व को अनुभव किया गया। इसका प्रभाव यह हुआ कि ईसाई मिशनरियों के धर्म सम्बन्धी प्रचार को भारत के सच्चे सपूत सहन न कर सके और देश के धर्म, विशेषकर हिन्दू धर्म, की रक्षा के लिए एक नवीन आन्दोलन आरंभ किया, जिसका उद्देश्य हिन्दू धर्म की अच्छाइयों को नये ढंग से जनता के सम्मुख रखना तथा उन्हें भारतीय गौरव की महानता का ज्ञान करवाना था।

(4) भारतीय छापेखानों की प्रगति की — इस देश के समाज-सुधार-आन्दोलन को विकसित या विस्तृत करने में महत्वपूर्ण कारण माना जा सकता है। अंग्रेजी शासन-व्यवस्था कायम हो जाने के बाद भारत में छापेखानों का विकास तेजी से हुआ। फलतः समाज-सुधार-कार्य अधिक सरल हो गया, क्योंकि इन छापेखानों की बदौलत अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकें प्रकाशित होना आरंभ हुईं जिनके द्वारा भारतीयों को ज्ञान में काफी सहायता मिली। भारतीय समाज-सुधारकों के विचार देश के कोने-कोने में फैलने लगे और दूर-दूर के देशों तक से उनके विचारों को लेकर उनसे भी जनता को परिचित कराना संभव हुआ।

(5) सामाजिक कुप्रथाओं की बहुलता — ने भी सुधारकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने में सहायता दी। आधुनिक समाज-सुधार-आन्दोलन जिस समय प्रारंभ हुआ, उस समय भारत में सती-प्रथा से लेकर देव-दासी प्रथा तक और धार्मिक अंधविश्वासों से लेकर जातीय भेदभाव तक अपने कटु रूप में भारतीयों के जीवन को प्रभावित कर रहे थे। समाज की प्रगति रुक-सी गई थी। इसलिए आवश्यकता इस बात की थी कि इस जड़ता को दूर करने के लिए कुछ प्रयत्न किए जाते। समाज-सुधार-आन्दोलन इसी सब का परिणाम था।

समाप्त